तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

वर्ष : २९ अंक : ११ फरवरी २००६

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ अंक - ११, फरवरी २००६

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	जीव	हरिसत्य भट्टाचार्य	६१३
२.	योगशतक	डॉ. इन्दु कला हीराचन्द झवेरी	६२०
३.	सिंहल की राजकन्या (सुदर्शना)	आचार्यश्री विजयविशालसेन सूरिजी म. सा.	६२८
४.	वैर का विपाक		६३७

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

जीव

हरिसत्य भट्टाचार्य

जड़ से भिन्न पदार्थों को 'जैन दार्शनिक' जीव कहते हैं। योग और सांख्य दर्शन में जिसे 'पुरुष' कहा गया है; न्याय, वैशेषिक और वेदान्त मत से जो आत्मा है, वह जैन दर्शन की दृष्टि से जीव है। इतना होने पर भी इनके बीच का भेद मामूली नहीं है। सांख्य तथा योगदर्शन-प्रतिपादित 'पुरुष' के साथ जैन दर्शन स्वीकृत जीव का भेद है। न्याय और वैशेषिक के आत्मा तथा जैन दर्शन के जीव के बीच में भी भेद है। वेदान्तियों का आत्मा और जैनों का जीव भी एक नहीं है। चार्वाकमत सम्मत निरात्मवाद को भी जैन नहीं मानते। जैन दार्शनिकों ने बौद्धों के विज्ञानप्रवाह-वादका भी खण्डन किया है। तब फिर जैन दर्शन-सम्मत जीवका लक्षण क्या है? द्रव्यसंग्रह और पंचास्तिकाय में उसकी व्याख्या इस प्रकार की है :—

जीवो उवओगमओ अमुत्तो कत्ता सदेहपरिमाणो।

भोत्ता संसारत्थो सिद्धो सो विस्ससोड्ढगई।।२१ (द्रव्यसंग्रह।)

जीव उपयोगमय, अमूर्त, कर्ता, अपने देह के समान परिमाणवाला, भोक्ता, संसारस्थ, सिद्ध और स्वभाव से ऊर्ध्वगतिवाला है।

जीवोत्ति हवदि वेदा उवओगविसेसिदो पहु कत्ता।

भोत्ता च देहमत्तो ण हि मूत्तो कम्मसंजुत्तो।। (पं. स. स.।)

जीव अस्तित्ववाला, चेतन, उपयोगविशिष्ट, प्रभु, कर्ता, भोक्ता, देहमात्र, अमूर्त और कर्मसंयुक्त है।

श्रीवादिदेवसूरि भी प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकार (७-५६) में कहते हैं कि—

चैतन्यस्वरूपः, परिणामी, कर्ता, साक्षाद्भोक्ता, स्वदेह परिमाणः, प्रतिक्षेत्रे विभिन्नः, पौद्गलिकादृष्टवांश्चायम्।

उपरोक्त वचनों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि जैन दर्शनानुसार जड़ से भिन्न जो जीव है वह सत्य पदार्थ है। वह चेतन, अमूर्त, संसारी दशा में कर्मवश, कर्ता, भोक्ता, देहप्रमाण और प्रभु इत्यादि लक्षणवाला है।

चार्वाक तो जड़ से भिन्न पदार्थ का अस्तित्व ही नहीं स्वीकार करते। वे पृथ्वी, पानी, वायु और तेज–इन चार पदार्थों को ही मानते हैं और कहते हैं कि इनके सिवाय अन्य एक भी एकान्त सत् पदार्थ नहीं हैं। उनका मत है कि जगत के समस्त पदार्थ इन्हीं चार महाभूतों के संमिश्रण से उत्पन्न होते हैं। मनुष्यादि जीव चेतन हैं, इससे तो वे इन्कार नहीं कर सकते; परन्तु चैतन्य है, इस लिये आत्मा के समान कोई पदार्थ होना चाहिये, इस बात को वे स्वीकार नहीं करते। जिस प्रकार धान्य और गुण आदि पदार्थ सड़ते सड़ते सुरा रूप रूप में परिणमित हो जाते हैं उसी प्रकार उपरोक्त चार महाभूतों से ही चैतन्य परिणमित होता है। चार्वाकों का यह सिद्धान्त है।

वर्तमान युग के कतिपय जड़वादी कुछ अंशों में इसी सिद्धान्त की दुन्दुभि बजा रहे हैं। वे कहते हैं कि जिस प्रकार यकृत में से एक प्रकार का रस निकलता है उसी प्रकार मस्तक में से चैतन्य उत्पन्न होता है। अतः एवं जड़ पदार्थ से भिन्न आत्मा नामक पदार्थ की– किसी स्वतन्त्र पदार्थ की–सत्ता मानने की आवश्यकता नहीं है।

इन सबको उत्तर देना चाहें तो कह सकते हैं कि, धान्य, गुण आदि में से जो परिणमित होता है वह वस्तुतः जड़ ही है। यकृत में से जो रस निकलता है वह भी जड़ है। ऐसा नियम है कि जड़ में से जड़ पदार्थ ही उत्पन्न हो सकता है। मस्तक में से भी ऐसा ही जड़ पदार्थ उत्पन्न होता संभव है। जड़ में से जड़ से सर्वथा भिन्न पदार्थ कैसे पैदा हो सकता है? चैतन्य जड़ का परिणाम कैसे हो सकता है? इस तर्क पर विचार करके, कुछ आधुनिक अध्यात्मवादी दार्शनिक जड़वादका त्याग करके चैतन्य की स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार करने की और आकर्षित हुए हैं। बौद्ध जड़ से चैतन्यकी उत्पत्ति नहीं मानते, उन्होंने विज्ञान की क्षणिक सत्ता मानकर जड़वाद को पीछे हटा दिया है। जैनों ने जीव में चैतन्यगुण स्वीकार करके अध्यात्मवाद की नींव खूब मजबूत कर दी है। जैनों ने चार्वाकों और बौद्धों को प्रबल उत्तर दिया है।

चार्वाक मत के खण्डन में जैन कहते है कि यदि जड़ में ही चैतन्य उत्पन्न होता हो तो प्राणी की मृत्यु के पश्चात् चैतन्य क्यों नहीं दीखता? मृत्यु के पश्चात् शरीर तो जैसे का तैसा ही रहता है; उसका कोई अंश कम नहीं हो जाता; मृत्यु होते रोग चला जाता है। उस रोग के जाने के बाद अकेला शरीर पड़ा रहता है, वह तो आपके सिद्धान्तानुसार सर्वथा निरोग-स्फूर्तियुक्त होना चाहिये, परन्तु ऐसा नहीं होता। इसी से हम कहते हैं कि जड़ शरीर कदापि चैतन्य का कारण नहीं हो सकता।

शरीर को चैतन्य का सहकारी कारण कहा जाय तो भी ठीक नहीं है, क्यों कि चैतन्य का एक अशरीरी–अजड़–उपादान तो आपको मानना ही पड़ेगा। परन्तु ऐसा मानने पर आपका सिद्धान्त मिथ्या हो जायगा। यह बात आपको अनुकूल न होगी।

यदि शरीर को ही चैतन्य का उपादानकारण माना जाय तो भी काम नहीं चल सकता, क्यों कि ऐसा मान लें तो जब कभी शरीर में विकार उत्पन्न हो तब चैतन्य में भी वैसा ही विकार आ जाना चाहिये, पर ऐसा अनुभव नहीं होता। इसके अतिरिक्त आनन्द, भय, शोक, निद्रा, मूर्च्छा जैसे विकार जब चैतन्य में आते हैं तब शरीर में भी उनके अनुरूप विकार दिखने चाहिये, परन्तु ऐसा होते हुए नहीं देखा जाता।

एक और आपत्ति भी होगी। प्राणी जितना अधिक मोटा हो, बुद्धि भी उसकी उतनी ही अधिक होनी चाहिये परन्तु साधारणतः इसके विपरीत ही देखा जाता है। शरीर यदि चैतन्य का उपादान कारण हो तो ऐसा क्यों नहीं होता? छोटे-पतले शरीरवाले प्राणी अधिक बुद्धिशाली देखे जाते हैं। इसके अतिरिक्त चैतन्यप्रवाह में प्राणी को 'अहं' ज्ञान रहता है अर्थात् सदैव यह ज्ञान रहता है कि 'मैं हूँ'। यह ज्ञान शरीर में से उत्पन्न नहीं होता। यदि ऐसा होता तो 'मेरा शरीर' यह प्रयोग कैसे संभव होता? जिसे 'मैं' कहते हैं वह शरीर से भिन्न और प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध हो सकनेवाली वस्तु है।

जैनों से बौद्ध दार्शनिक इस बात में सहमत है कि, चैतन्य जड़ पदार्थ का विकार नहीं है। परन्तु बौद्ध आत्मा नामक एक सत् पदार्थ के अस्तित्व को

नहीं मानते। वे कहते हैं कि प्रतिक्षण विज्ञान का उदय और विलय होता रहता है। इस विज्ञान के मूल में कोई स्थायी सत् पदार्थ नहीं है। एक क्षण जो विज्ञान संस्काररूप होता है, दूसरे क्षण वही विज्ञान का कारणरूप होता है; फिर वह कार्यरूप विज्ञान अपने बाद के विज्ञान का कारण हो जाता है। इस प्रकार परस्पर भिन्न क्षणिक विज्ञानसमूह में परम्परा से कार्यकारणभाव होता है। बौद्ध इसे विज्ञानप्रवाह कहते हैं, विज्ञानसंतान भी कहते हैं। इस प्रवाहरूप विज्ञानसंतान के अतिरिक्त आत्मा या जीव आदि अन्य कोई वस्तु नहीं है।

Hume, Mill आदि वर्तमान युग के Sensationist दार्शनिक भी बौद्धों के समान विज्ञानवादी अथवा निरात्मवादी हैं। उन्होंने एक चैतन्यधारी और अविच्छिन्नता की कल्पना की है। बौद्ध दर्शन के विज्ञान प्रवाह से इसका मेल ठीक बैठता है।

इस निरात्मवाद के विरुद्ध पहली आपत्ति तो यही है कि, क्षणिक विज्ञानसमूह के मूल में कोई नियामक–सत्पदार्थ नहीं है। दो पदार्थों को जोड़नेवाली कोई वस्तु न हो तो ये दोनों अलग हो जाय, यह बात समझ में आने योग्य है। अतएव संतान अथवा विज्ञानप्रवाह असंभव हो जाता है। आत्मा न हो तो क्षणिक विज्ञानसमूह में क्रम, व्यवस्था या शृंखला कैसे रह सकती है? यदि शृंखला न हो तो स्मृति (पहले के अनुभव का पुनःबोध) और प्रत्यभिज्ञा (यही वही है) कैसे हो सकती है? वैदान्त दर्शन ने भी इस विज्ञानवाद का खंडन किया है। जैनाचार्यों ने भी चुन चुनकर इस विज्ञानवाद के दोष बतलाये हैं।

बौद्धों के अनात्मवाद के संबन्ध में जैनाचार्य कहते हैं कि यदि जीव जैसी कोई वस्तु न मानो तो फिर स्मृति का होना असम्भव हो जायेगा। सर्वथा पृथक हो जाने वाले विज्ञानसमूह में एक के अनुभव की स्मृति दूसरे को कैसे हो सकती है? यदि ऐसा ही बनता हो तो फिर एक व्यक्ति का अनुभव अन्य की स्मृति का विषय होना चाहिये। परन्तु ऐसा नहीं देखा जाता।

बौद्ध चैत्यवंदना में विश्वास रखते हैं। जैनाचार्य कहते हैं कि, आपके धर्म में

चैत्यवन्दना एक पुण्यकार्य है, और उससे उत्तम फल की प्राप्ति होता है; परन्तु जो चैत्यवन्दन करता है वह दूसरे ही क्षण में नहीं रहता—बदल जाता है। तब फिर चैत्यवंदन का सुफल किसे मिलेगा? इससे ऐसा होगा कि करेगा कोई और फल मिलेगा किसी और को; अथवा करेगा कोई और उसका फल किसी को भी नहीं मिलेगा। आपका सिद्धान्त अकृताभ्यागम और कृतप्रणाश नामक दो वड़े दोषों से दूषित है। बिना किये भोगना पड़े और कृतकर्म निष्फल हो जाय, ये दोष कुछ ऐसे वैसे नहीं हैं। आपका अनात्मवाद तो वस्तुतः कर्मफलवाद के मूल में ही कुठाराघात करता है।

युक्तिपूर्वक बौद्धों का विरोध करने में जैन दर्शन और वेदान्त दर्शन एकमत हैं, परन्तु जैन और वेदान्त के मौलिक सिद्धान्त में भेद है। वेदान्त दर्शन जीवात्माओं की परामार्थिक सत्ता स्वीकार करने से सर्वथा इन्कार करता है। उसका मत है कि आत्मा एक और अद्वितीय है— अद्वैत ब्रह्म है; असंख्य जीवात्मा, एक अद्वितीय–एकमात्र सत्य अद्वैत ब्रह्म के परिणाम अथवा विवर्तमात्र हैं। ब्रह्माद्वैतवादी कहते हैं कि, समस्त जीवों में यही एक परमात्मा विराजमान है; एक आत्मा के अतिरिक्त अन्य कोई आत्मा, दूसरा कोई सद्पदार्थ नहीं है। Spinoza और Parmenides के मत के साथ वेदांतमत की कुछ समानता है।

वेदांत के इस अद्वैत सिद्धान्त को जैन नहीं मानते। जैन दर्शन के मतानुसार आत्मा अथवा जीवों की संख्या अनन्त है एवं प्रत्येक जीव एक दूसरे से स्वतन्त्र है। जीव स्वतन्त्र न होते, मूलतः सब जीव एक ही होते तो एक जीव के सुख से सब जीव सुखी हो जाते, एक के दुःख से सब दुःखी होते; एक के बन्धन से सब बन्धनग्रस्त रहते और एककी मुक्ति से सब मुक्त हो जाते। जीवों की भिन्न भिन्न अवस्था देखकर सांख्यदर्शन ने आत्मा के अद्वैतवाद का परिहार किया और आत्मा की विविधता मानी। जैन दर्शन ने 'प्रतिक्षेत्रे' भिन्न कहकर सांख्यसम्मत जीव की विविधता स्वीकार की है।

अद्वैतवाद के विषय में जैन दार्शनिक कहते हैं कि सत्ता, चैतन्य, आनन्द आदि कितने ही गुण ऐसे हैं कि जो सभी आत्मा अथवा जीवों में होते हैं। इस गुणसामान्य की दृष्टि से आत्मा या जीव एक है ऐसा कहें तो कह सकते हैं।

समस्त जीवों में इस प्रकार की गुणसामान्यता होती ही है। वेदांत का अद्वैतवाद इस रीति से कुछ अंशों में ठीक है, परन्तु प्रत्येक जीव में विशिष्टता होती है इस बात का इन्कार नहीं किया जा सकता। इस विशिष्टता के कारण ही एक जीव को दूसरे से भिन्न कहना पड़ता है। विशिष्टता न होती तो एक जीव के मोक्ष पाने पर सब जीव मोक्ष प्राप्त कर लेते है। अविशेषणभाव के कारण जीव या आत्मा का बहुत्व मानना पड़ता है।

आत्मा की विविधता के विषय में सांख्य और जैन दर्शन एकमत होते हुए भी वे जीव के कतृत्व और भोक्तृत्व के विषय में भिन्न हैं। सांख्य मतानुसार पुरुष-आत्मा नित्य, शुद्ध, बुद्ध-मुक्त है; असंग, निस्पृह, अलिप्त और अकर्ता है। जगद्व्यापार से उसका कोई संबन्ध नहीं है। प्रकृति ही सृष्टि की रचना करती है, पुरुष कुछ नहीं कर सकता। वह फल भी नहीं भोगता। वह तो केवल निष्क्रिय और अभोक्ता है। जर्मन दार्शनिक कांट के कथन का भी यही अभिप्राय है। वह कहता है कि Noumenal self के साथ व्यावहारिक ज्ञानप्रवाह का कुछ संबन्ध नहीं है। सांख्य भी यही कहता है कि पुरुष का जगत के व्यापार के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।

सांख्यदर्शन से हम पूछ सकते हैं कि, पुरुष में कर्तृत्व नहीं है तो फिर बन्धन और मोक्ष किसके लिये है? आत्मा सुख दुःख न भोगता हो तो यह समस्त व्यवहार किस प्रकार चल सकता है? इस प्रकार न्यायदर्शन सांख्यदर्शन की अच्छी खबर लेता है। न्यायदर्शन आत्मा में सुख, प्रयत्नादि गुणों का आरोप करता है। जीव के एकान्त असंगत्व के विषय में जैन दर्शन सांख्य का प्रतिवाद करता है और न्यायदर्शन के साथ सहमत है।

जैन दर्शन सांख्यमत की सुन्दर समीक्षा करता है। वह कहता है कि—पुरुष सर्वथा अकर्ता हो तो उसे किसी प्रकार का अनुभव न होवे। परन्तु मैं सुनता हूँ, मैं सूंघता हूँ आदि प्रतीति तो हम सबको होती ही है। अतएव आत्मा का अकर्तृत्व हमारे अनुभव के विरुद्ध है।

आप कहेंगे कि मैं सुनता हूं, मैं सूंघता हूं इस प्रकार की प्रतीति तो अहंकार से उत्पन्न होती है, परन्तु आप स्वयं ही इस बात से इन्कार करते हैं। आप सांख्यवादी लोग अनुभव को पुरुषकार्यरूप तो कहते ही हैं; अनुभव को

अहंकारप्रसूत नहीं मानते। इस प्रकार आप पुरुष के कर्तृत्व को मान लेते हैं। सांख्य कहते हैं कि, पुरुष स्वभावतः भोक्ता नहीं है; केवल उसमें भोक्तृत्वका आरोपण किया जाता है। क्योंकि जितना सुख दुःख है वह बुद्धि द्वारा ग्रहण किया जाता है और बुद्धि तो प्रकृति की है। अतएव पुरुष सुख-दुःख का भोक्ता है यह कल्पनामात्र है। प्रकृति परिणामवाली बुद्धि में सुख-दुःख संक्रान्त होता है और शुद्धस्वभावी पुरुष में इस सुख-दुःख का प्रतिबिम्ब पड़ता है। जैन इसका उत्तर देते हैं कि, पदार्थ का एक परिणाम अर्थात् विकृति स्वीकार करो, वरना इस प्रतिबिम्बका उदय भी असम्भव हो जायगा। स्फटिक में जो प्रतिबिम्ब पड़ता है उससे स्फटिक का परिणाम मानना पड़ता है। अब यदि पुरुष में सुख-दुःख प्रतिबिम्बित होता हों तो उसके द्वारा पुरुष में एक प्रकार का परिणाम होता है, अर्थात् उसमें कुछ अंशों में भोक्तृत्व है, यह स्वीकार करना पड़ता है। और परिणाम होने से उसके कतृत्व का स्वीकार किये बिना नहीं चलेगा। यही कारण है जिससे जैन जीवको कर्ता और साक्षात् भोक्ता मानते हैं। आत्मा को गुणाश्रयरूप मानते हुए भी जैन मत न्यायमत से कुछ भिन्न है। नैयायिक आत्मा को (१) जड़स्वभाव, (२) कूटस्थ नित्य और (३)सर्वगत मानते हैं। जैन दार्शनिक यहां अलग पड़ते हैं।

क्रमशः

योगशतक

प्रस्तावना– डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी

प्रथमकृति सुबाहुचरित्र के अन्त में इस प्रकार पुष्पिका है:– **लिखितं सावदेव्या सिवदेविनित्तं कर्मक्षयार्थं च।** इस पर से ऐसा प्रतीत होता है कि इस पुस्तक की लेखिका स्वयं सावदेवी ही होगी, परन्तु दूसरा एक ऐसा मत है कि 'लिखित' पद होने पर भी उसका अर्थ लिखा हुआ नहीं किन्तु लिखाया हुआ ऐसा करना चाहिए। यह दूसरा मत आचार्य श्री जिनविजयजी का है। अक्षर तथा लिपि की मरोड़ पर से उनका एसा अभिप्राय है कि लिखने वाला कोई पुरुष ही होना चाहिए। यदि ऐसा हो तो सावदेवी ने अपनी किसी रिश्तेदार या सम्बन्धी सिवदेवी के लिए यह पुस्तक लिखाई है, ऐसा अर्थ फलित होता है। चाहे जो हो, इतना तो निःशंक है कि ये सातों ही कृतियाँ एक ही हाथ से लिखी गई हैं, उसे लिखनेवाली नहीं तो लिखाने वाली एक स्त्री है और वह भी एक स्त्री के लिये।

योगशतक एक पद्यबद्ध ग्रन्थ है। इसके नाम के अनुसार इसमें सौ पद्य हैं और वे प्राकृत भाषा में तथा आर्या छन्द में ग्रथित हैं।

योगशतक में योग का विषय चर्चित है। जैन परम्परा में प्रचलित परिभाषा तथा वर्गीकरण के अनुसार यद्यपि इस ग्रन्थ की रचना हुई है, फिर भी इसमें कुछ आवश्यक स्थानों पर बौद्ध एवं सांख्य-योग की तुलना करके यथायोग्य समन्वय भी किया गया है।

प्रस्तुत योगशतक यद्यपि एक आध्यात्मिक ग्रन्थ है, परन्तु तलाश करने पर योगशतक नामकी एक अन्य कृति भी ज्ञात हुई है। वह कृति वैद्यक की है और उसकी भाषा संस्कृत है। शतक होनेपर भी उसकी प्राप्त प्रतियों में २२४ पद्य हैं। इस वैद्यक विषयक कृति की अनेक प्रतियाँ जैन भण्डारों में सुलभ हैं। हमने मुनि श्री पुण्यविजयजी के द्वारा पाटनस्थित हेमचन्द्र ज्ञानमन्दिर की एक प्रति प्राप्त करके देखी भी है।

इस बीत नयचक्र के सम्पादक मुनि श्री जम्बू विजयजी से ज्ञात हुआ कि तिब्बती ग्रन्थों में भी एक योगशतक है। इस पर से हमने शान्तिनिकेतन तथा नालन्दा बौद्ध विद्यापीठ में तलाश की तो मालुम हुआ है कि तिब्बती भाषा में अनुदित वह ग्रन्थ भी वैद्यक का ही है। वह अनुवाद संस्कृत पर से ही हुआ है, यह निशंक है। इस पर से हमने यह जानने का प्रयत्न किया कि तिब्बती में अनुदित योगशतक और पाटन के भण्डार में से उपलब्ध योगशतक दोनों एक ही हैं या भिन्न भिन्न। अन्त में नालन्दा विद्यापीठ के प्राध्यापक डाक्टर नथमलजी टाटिया ने वहाँ के एक लामा द्वारा थोड़ा सारानुवाद करवाकर भेजा। यद्यपि वह सार प्रारम्भ के दो तथा अन्तिम एक पद्य का ही था, तथा प्रारम्भ के उन दो पद्यों के सार की पाटन से प्राप्त योगशतक के आरम्भ के दो संस्कृत पद्यों के साथ अर्थ की दृष्टि से तुलना की तो ऐसा लगा कि प्रारम्भ के वे दोनों पद्य दोनों में एक ही है। तिब्बती अनुवाद के तीसरे पद्य से लेकर आगे के पद्यों का सार अब तक प्राप्त नहीं हुआ अतः ऐसा तो इस समय नहीं कहा जा सकता कि आगे का भाग तिब्बती और संस्कृत में कितने अंश में समान है या भिन्न है, परन्तु प्रारम्भ के दो पद्यों का भाव दोनों में समान होने से ऐसा अनुमान होता है कि मूल में कृति एक ही होगी और उसका तिब्बती में अनुवाद होकर तिब्बत में सुरक्षित रहा, जब कि दूसरी ओर मूल संस्कृत ग्रन्थ भारत में और खास तौर पर जैन भण्डारों में ही सुरक्षित रहा।

तिब्बती अनुवाद में कुल ११० पद्य हैं। उनमें से अन्तिम पद्य उपसंहार रूप होने से, सामान्यतः बौद्ध ग्रन्थों में मिलता है उस तरह, ग्रन्थकार उसमें अपनी कृति के पुण्य के बदले में सबका आरोग्य चाहता है।

पाटन से प्राप्त संस्कृत वैद्यक ग्रन्थ का ११०वाँ पद्य देखा तो वह तिब्बती पद्य से भिन्न है। इसके अतिरिक्त तिब्बती की अपेक्षा मूल संस्कृत में १४ पद्य अधिक हैं। हम प्रारम्भ के दो पद्यों का सार ही प्राप्त कर सके हैं; इसलिये समग्र ग्रन्थ के बारे में तुलना करने का काम इस समय शक्य नहीं है।

ग्रन्थकार आचार्य हरिभद्र

प्रस्तुत ग्रन्थ योगशतक के कर्ता आचार्य श्री हरिभद्र हैं। हरिभद्र नामके

अनेक आचार्य जैन परम्परा में हुए हैं।[१] उन सबमें जो याकिनीमहत्तरासूनु के नामसे प्रसिद्ध हैं और समयकी दृष्टि से जो सबसे पहले माने जाते हैं वह हरिभद्र ही यहाँ प्रस्तुत हैं।

अस्तित्व काल—

आ. हरिभद्र का अस्तित्वकाल पहले से चली आती मान्यता के अनुसार वि. सं. ५३० से ५८५ माना जाता था।[२] डॉ. जेकोबीन ने उपमितिभवप्रपंचा-कथा की प्रस्तावना में विक्रम की नवीं-दसवीं शती माना था। पं. (श्री कल्याण विजयजी ने धर्मसंग्रहणी की अपनी संस्कृत प्रस्तावना में इसका निरास करके विक्रम की छठी शती स्थापित करने का प्रयत्न किया था,[३] परन्तु श्री जिनविजयजी ने अनेक बाह्य तथा आन्तरिक प्रमाणों की समालोचना करके उनका समय वि. सं. ७५७ से ८२७ निश्चित रूप से सिद्ध किया है[४] और यही अब सर्वमान्य भी हुआ है।[५]

जीवनवृत्त—

आ. हरिभद्र के अनेक ग्रन्थ उपलब्ध होने पर भी उनमें कहीं पर उनके जीवन के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती। जो कुछ अल्प-स्वरूप उनके कतिपय ग्रन्थों की अन्तिम प्रशस्तियों में से ज्ञात होता है वह इस प्रकार है—

वह श्वेताम्बर सम्प्रदाय के तथा विद्याधर गच्छ के थे। गच्छपति आचार्य का नाम जिनभट, दीक्षागुरु का नाम जिनदत्त और धर्ममाता साध्वी का नाम

---

१. अनेक हरिभद्र की जानकारी के लिए देखों श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई कृत 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' पृ. ८८२।

२. वही पृ. १५५।

३. पृ. २३ से ३४।

४. जैन साहित्य संशोधक भाग १, अंक १, पृ. ५३। लेखका नाम है :- 'हरिभद्र सूरिका समयनिर्णय।'

५. डॉ. जेकोबीने भी अपना मत भ्रान्त था ऐसा 'समराइच्चकहा' की अपनी प्रस्तावना में स्वीकार कर श्री जिनविजयजी के मत को ही मान्य रखा है। पं. श्री कल्याणविजयजी

याकिनी महत्तरा था। इस सब बातों का एक साथ निर्देश तो उन्होंने आवश्यक सूत्र की 'शिष्यहिता' नामकी अपनी टीका के अन्त में किया ही है;[१] अन्य स्थानों में एक या दूसरी बात का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त उनके जीवन के बारे में कुछ अधिक जानकारी, जिसमें से कुछ के ऐतिहासिक होने की सम्भावना है, उत्तर कालीन अधोलिखित ग्रन्थों में उपलब्ध होती है[२]—

१. आ. हरिभद्र के 'उपदेशपद' परकी मुनिचन्द्र की टीका (वि. सं. ११७४, ई. १११८) का अन्तिम भाग। यह टीका छप गई है।

२. जिनदत्तकृत गणधरसार्धशतक (वि. सं. ११६९-१२११, ई, १११२-११५४)। यह भी मुद्रित है।

३. प्रभाचन्द्रकृत प्रभावक चरित, नवम शृंग (वि. सं. १३३४, ई. १२७८) यह भी छपा है।

४. राजशेखर का प्रबन्धकोश (वि. सं. १४०५, ई. १३४९) यह भी प्रकाशित हो गया है।

५. सुमतिगणी की गणधरसार्धशतक की वृत्ति (वि. सं. १२९५, ई. १२३९)। यह अमुद्रित है।

भी 'प्रभावकचरित' की प्रस्तावना (पृ. ५४) में अपना पहले का मत सुधारकर श्री जिनविजयजी के मत को मान्य रखते हैं। प्रो. के. बी. अभ्यंकर 'विशतिविंशिका' की प्रस्तावना (पृ. १) में आचार्य हरिभद्र को विक्रम की दसवीं शताब्दी में रखते हैं।

१. 'समाप्ता चेयं शिष्यहिता नामावश्यकटीका। कृतिः सिताम्बराचार्यजिन-भटनिगदानुसारिणो विद्याधरकुलतिलकाचार्य जिनदत्तशिष्यस्य धर्मतो याकिनीमहत्तरासूनोरल्पमतेराचार्यहरिभद्रस्य।'

२. इन ग्रन्थों में से उपलब्ध सब तथ्योंकी चर्चा पं. हरिगोविन्ददानने 'हरिभद्रसूरि चरित्र' (संस्कृत) में, पं. श्री कल्याणविजयजी ने 'धर्मसंग्रहणी' की संस्कृत प्रस्तावना में, श्री जिनविजयजी ने 'हरिभद्रसूरि का समयनिर्णय' नामक लेख में तथा जेकोबी ने 'समराइच्चकहा' की प्रस्तावना में विस्तार से की है। इनके अतिरिक्त पं. बेचरदास ने 'जैनदर्शन' की प्रस्तावना (गुजराती) में और श्री मोहनलाल देसाई ने 'जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास' (पृ. १५५) में आ. हरिभद्र की जीवनरेखा अंकित की है। इन सबमें से आवश्यक निष्कर्ण यहाँ दिया गया है।

ऊपर १,३,४ और ५ में उल्लिखित वृत्तान्त के अनुसार आ. हरिभद्र का जन्मस्थान चित्रकूट (आधुनिक चित्तौड़) था। दीक्षित होने से पूर्व वह सामान्यतः चित्तौड़ में ही रहते थे, परन्तु बाद में उनका बहुत कुछ साधु जीवन राजस्थान के आस पास के स्थानों में तथा गुजरात के प्रदेश में व्यतीत हुआ हो ऐसा लगता है; क्योंकि उस प्रदेश में बसनेवाले उद्द्योतनसूरि के वह गुरु थे।[१]

गणधरसार्थशतक की वृत्ति में कहा है कि आ. हरिभद्र जाति से ब्राह्मण थे, और प्रभावकचरित में भी वे राजा जितारि के पुरोहित थे ऐसा निर्देश है। यद्यपि मूल गणधरसार्धशतक तथा उपदेशपद की मुनिचन्द्रकृत टीका में इस बात का उल्लेख नहीं है, फिर भी वह असत्य नहीं है ऐसा जेकोबी मानते हैं; क्योंकि आ. हरिभद्र का जैनधर्म विषयक गहरा ज्ञान एक ओर रखें, तो भी उनका अन्यान्य विषयों का ज्ञान इस तरह का है, जो ब्राह्मण को ही क्रम प्राप्त हो। इसके अतिरिक्त, उनमें धर्मपरिवर्तन की मुख्य घटना जिस प्राचीनतम उल्लेख (मुनि चन्द्रकृत टीका) में मिलती है वह भी यही बात सूचित करता है।[२]

डॉ. जेकोबी कहते हैं कि, 'याकिनी साध्वी' को अपनी धर्ममाता के रूप में स्वीकार करके हरिभद्र अपना सत्य-धर्म में परिवर्तन उन्हीं के कारण हुआ है ऐसा मानते हैं। यह उनका द्वितीय जन्म कहा जा सकता है।[३] यह परिवर्तन कैसे हुआ, इसकी किंवदन्ती 'प्रभावकचरित' में इस प्रकार है—

हरिभद्र चित्रकूट में राजा जितारिके पुरोहित थे। उन्होंने विद्वत्ता के अभिमान में आकर प्रतिज्ञा की थी कि जिसका कहा हुआ न समझूँ उसका मैं शिष्य हो जाऊँगा। एक बार बन्धनमुक्त एक उन्मत्त हाथी से बचने के लिए उन्होंने जैन मन्दिर का आश्रय लिया। वहाँ तीर्थंकर की प्रतिमा को देखकर उन्होंने उसका उपहास किया। दूसरे दिन वह घर की तरफ जा रहे थे तब मार्ग में

---

१. देखो जेकोबी की समराइच्चकहा की अंग्रेजी प्रस्तावना पृ. ६। इसका गुजराती अनुवाद 'जैनसाहित्यसंशोधक' खण्ड ३, अंक ३ में आया है।

२. वही पृ. ८।

३. वही पृ. ८।

मध्यरात्रि के समय उन्होंने एक वृद्ध साध्वी के मुख से उच्चरित एक गाथा[१] सुनी, जिसका अर्थ वह न समझ सके। इसपर जब वह उस साध्वी के पास शिष्य होने के लिए गये तब उसने गुरु जिनभटसूरि के पास जाने के लिए कहा। जब श्री हरिभद्र ने गुरु से गाथा का अर्थ पूछा तब उन्होंने कहा कि जैन-सूत्रों के अर्थ तो जैन प्रव्रज्या लेकर जो विधिपूर्वक पढ़ता है उसे ही कहे जाते हैं। इससे उन्होंने दीक्षा ली और याकिनी महत्तरा को धर्ममाता के रूप में स्वीकार किया। श्री हरिभद्रकी विद्वत्ता तथा उनके चरित्र के कारण गुरु ने उन्हें अपना पट्टधर शिष्य बनाया[२]।

आ. हरिभद्र सामान्यरूप से अपने प्रत्येक ग्रन्थ के अन्त में 'विरह' शब्द का प्रयोग करते हैं। यह उनके ग्रन्थों को पहचानने का एक चिन्ह है। परम्परागत अनुश्रुतिके अनुसार विरह शब्द आ० हरिभद्र के दो भतीजे शिष्य हंस और परमहंसका वियोग सूचित करता है, यद्यपि स्वयं उन्होंने कहीं पर भी इस बात का निर्देश नहीं किया। यह अनुश्रुति संक्षेप में इस प्रकार हैं—

आ. हरिभद्र ने हंस और परमहंस नामके दो भतीजों को दीक्षा देकर शिष्य बनाया। शास्त्राभ्यास करने के पश्चात् बौद्ध शास्त्र सीखने के लिए वे बौद्ध विद्यास्थान में गये वहाँ जैन साधु होने की शंका पड़ने पर गुरु को परीक्षा करने की इच्छा हुई। उसने चलने के मार्ग पर जिन प्रतिमा रखकर सब

---

१. वह गाथा इस प्रकार है—

चक्किदुगं हरिपणागं पणागं चक्कीण केसवो चक्की।
केसवचक्की केसव दुचक्की केसी य चक्की य।।

आवश्यक निर्युक्त गा. ४२१

अर्थात्—प्रथम दो चक्रवर्ती हुए, उनके बाद पाँच वासुदेव, बाद में पाँच चक्री, उनके पश्चात् एक वासुदेव और एक चक्की, उनके बाद केशव और चक्रवर्ती, उनके पश्चात् केशव और दो चक्रवर्ती, उनके बाद केशव और अन्तिम चक्रवर्ती हुए।

२. जितारि राजा के पुरोहित की बात तथा हाथी के प्रसंग को छोड़कर उक्त वर्णन की सभी बातों का संवाद मुनिचन्द्रसूरि के उल्लेख में संक्षेप में संक्षेप मिलता है। इस पर से कहा जा सकता है कि यह अनुश्रुति प्राचीन है और इसमें कोई खास अत्युक्ति न होने से इसे सत्य मान सकते हैं। विशेष ऊहापोहके लिये देखो जेकोबी की समराइच्चकहा की प्रस्तावना पृ. ९।

शिष्यों को उसपर से चलने को कहा। हंस और परमहंस प्रतिमा पर खड़िया मिट्टी से तीन रेखाएँ खींचकर और इस तरह जिन प्रतिमा को बुद्ध प्रतिमा बनाकर उसपर पैर रखकर चले। अपने को मार डालने का बौद्धों का विचार ज्ञात होने पर उन्होंने वह स्थान छोड़ दिया। बौद्ध राजा के सैन्य ने उनका पीछा पकड़ा। हंस लड़ते मरा। परमहंस समीपवर्ती नगर के राजा सुरपाल की सहायता से गुरु के पास पहुँचा और सब बातें कहकर स्वर्गवासी हुआ।[१] यह कथा सुनकर आ. हरिभद्र क्रुद्ध हुए। उन्होंने बौद्धों के साथ शास्त्रार्थ किया। जो हारे वह खौलते हुए कड़ाहे में गिरे– यह शास्त्रार्थ की शर्त थी। बौद्धाचार्य हारने पर खौलते हुए तेल में डाल दिये गये। आ. हरिभद्र के गुरु को मालूम होने पर उनके कोप की शान्ति के लिए उन्होंने तीन गाथाएँ लिख भेजीं। उन्हें पढ़कर आ. हरिभद्र को पश्चात्ताप हुआ। इन तीन गाथाओं पर से उन्होंने समरादित्य कथा (समराइच्चकहा) प्राकृत में लिखी, ऐसा कहा जाता है। उन्होंने १४४० या १४४४ बौद्धों का संहार करने का संकल्प किया था, अतः उसके प्रायश्चित के तौर पर उन्होंने उतने ग्रन्थों की रचना की, ऐसा भी माना जाता है।[२]

---

१. लगभग ऐसी ही कथा प्रसिद्ध दिगम्बर विद्वान्-अकलंक के बारे में भी मिलती है। अकलंक और उनके छोटे भाई निकलंक गुप्तरूप से बौद्ध मठ में विद्याध्ययन के लिए जाते हैं। पकड़े जाने पर दोनों को कारावास में डाला जाता है। वहाँ से रात्रि के समय आत्मरक्षा के लिये वे दोनों भाग निकलते हैं। उन्हें पकड़ने के लिये घुड़सवार पीछे पड़ते हैं। अकलंक जिनशासन के प्रचार का उद्देश्य अपनी विद्या के बल से सिद्धकर सकेंगे ऐसा मानकर निकलंक उन्हें एक तालाब में छिप जाने को कहता है और स्वयं सैनिकों द्वारा मारा जाता है। सैनिकों के जाने के पश्चात् अकलंक बाहर आते हैं।

अकलंक के विषय में इस प्रकार की कथा प्रचलित है, पर स्वयं अकलंक कहीं पर भी अपने भाई निकलंक का उल्लेख नहीं करते। इस कथा की ऐतिहासिकता एवं हंस-परमहंस की कथा पर इसके प्रभाव के बारे में विस्तृत चर्चा श्री कैलाशचन्द्र जी शास्त्री ने की है। देखो न्यायकुमुन्दचन्द्र भा. १, पृ. ३० से ३५।

२. ऐसी ही एक आख्यायिका कुछ परिवर्तन के साथ राजशेखर के प्रबन्ध कोश में उल्लिखित है। जेकोबी लिखते हैं कि 'इस अनुश्रुति में कुछ तथ्य हो सकता है, परन्तु बारीकी से देखने वाला अभ्यासी इसे हरिभद्र के जीवन की एक ऐतिहासिक घटना के रूप में स्वीकार नहीं करेगा।' देखो समराइच्चकहाकी अंग्रेजी प्रस्तावना पृ. १७।

आ. हरिभद्र के जीवनवृत्त के लिए ऊपर जिन ग्रन्थों का आधार दिया है उनमें हमने भद्रेश्वरसूरि के कहावली (प्राकृत) ग्रन्थ को नहीं लिया। श्रीजिनविजयजी के लेख के आधारपर जेकोबीने उसका सिर्फ निर्देश ही किया है।[१] यह अनुद्रित है और इसकी एकमात्र ताड़पत्री प्रति पाटन के ग्रन्थभण्डार में है। इसमें आ. हरिभद्रसूरिका प्रबन्ध सबसे अन्त में है, इतना ही नहीं, जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण के सम्बन्ध में 'संपयं देवलोयं गओ' अर्थात् अभी स्वर्गवासी हुए—ऐसे शब्द प्रयुक्त हैं। इस परसे डॉ. उमाकान्त शाह कहावली को प्राचीन मानते है।[२] श्री कल्याण विजयजी ने प्रभावक चरित की अपनी प्रस्तावना में 'कहावली' में उपलब्ध बातों का सर्वप्रथम उपयोग किया है। वह भी उसे इतर आधारभूत ग्रन्थों की अपेक्षा प्राचीन एवं प्रामाणिक मानते हैं। श्री जिनविजयजी तथा मुनि श्री पुण्यविजयजी के साथ परामर्श करने पर मालूम हुआ कि उनका भी ऐसा ही मत है। इससे इस ग्रन्थ में उपलब्ध बातों का यहाँ पर खास उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है।

क्रमशः

---

१. वहीं पृ. ६।

२. देखो 'जैनसत्यप्रकाश' वर्ष १७, अंक ४, पृ. ८९-९०।

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

दुनिया की दौलत से आत्मा का वैभव अनंत गुना कीमती है।

शरीर की, बुद्धि की, खजाने की, सेना की एवं अधिकार की सम्पत्ति के सामने आत्मा की संपत्ति जीतती है और मनुष्य उसी से विजेता बन जाता है। सदा के लिए विजयी बन जाता है। हां, राग-द्वेष क़ा जेता विजेता-विजयी जिन, जिनेश्वर।

गुण ही आत्मा की समृद्धि है, जो आत्मा में विपुल मात्रा में भरी पड़ी है, कहीं से लानी नहीं - प्रकट करनी है - जो दबी पड़ी है।

संसार में कोई अच्छा नहीं, कोई बुरा नहीं, लेकिन गुणवान को लोग अच्छा और गुणहीन या अवगुणी को बुरा कहते हैं।

गुण से यह जीव महान् और सुयोग्य बनता है। सुयोग्य को सब सुख सम्पत्ति व सफलता मिलती है - अपने ही नहीं पराये भी उसे चाहते हैं, आदर देते व इज्जत से देखते हैं।

धन्या श्रेष्ठिकन्या थी। जैसी रूपवती वैसी ही गुणवती सुशील और कलावती भी। हिरण्यपुर के नर-नारी आज उसे आंसू के अर्ध्य दे रहे थे। उसकी सूझ-बूझ व गुणों को यादकर वे गद्‌गद् हो रो उठते थे।

धन्या सच ही धन्य हो गयी थी। छोटी होते हुए भी कितनी प्रौढ़ थी वह ?

जब देखो तब होठों पर मुस्कान, खुश खुशाल, सदाबहार चेहरा। कभी चिढ़ नहीं, उदासी भी नहीं। बातें भी हिम्मत की - त्याग की, बलिदान की, तत्त्व की, तथ्य की, परमार्थ की। इतनी सी उम्र में कितनी समझदारी पायी थी उसने!

माता-पिता की इकलौती बेटी, भाई की एकमात्र बहन धन्या। कितनी प्यारी दुलारी निखरती जवानी में भी बालक की तरह भोली और सरल-सालस। खूबसूरत मगर ओछी नहीं, नगरसेठ की बेटी किन्तु जरासा भी अभिमान नहीं। घर पर कोई भी आवे तो वह कितना आव आदर देवे और उदास को भी हँसा दे। दयालु भी, उदार भी। अकारण ही वात्सल्य उपजाने वाली धन्या छोटी सी बीमारी भुगत अचानक ही चल बसी और पत्थर के दिल भी दहल उठे।

परिवार को बिलखता छोड़ वह मुरझा गई। घर में ही नहीं सारे नगर में शोक की छटा छा गई, जैसे कोई सुंदर बगिया में हिमपात हुआ हो।

जहाँ देखो वहाँ लोग धन्या की गुणगरिमा, विलक्षणता की ही बातें करते आँखे गीली करते थे।

अपार विविधता और विचित्रता से भरे इस संसार में निरंतर घटना-दुर्घटना घटती ही रहती है और प्राणियों पर निश्चित रूप से उसका प्रभाव पड़ता रहता है और आनन्द या उद्वेग, हास्य या रुदन सुख या दुःख, प्रिय या अप्रिय, नृत्य या पछाड़ के रूप में जीव उसे अनुभव करता है।

किसी को बहुमूल्य शृंगार से सजाया जा रहा है तो किसी की अर्थी बाँधी जा रही है। जहाँ हर पल रंग बदलते हैं यह वह दुनिया हैं, जिसमें रंग जमाने की कोशिश में हम जीते हैं और आखिर रंग ही नहीं उड़ जाता हम ही उड़ जाते हैं। जब हम उड़ गये तो हमारे पास बचा ही क्या ?

अपनी प्यारी बहन धन्या के अकाल अवसान से धनपाल को घोर आघात लगा था। बहन का शुद्ध वात्सल्य, मधुरभाषा, उदात्त सरल व्यवहार, तथा सौम्यता गंभीरता, मृदुता आदि गुणों को यादकर वह बच्चों की तरह रो उठता था।

कोई यदि मनुष्य को रोया तो कुछ रोया, मनुष्य के गुण को कोई रोया बहुत कुछ रोया मगर आदमी मतलब को ही रोया तो क्या खाक रोया?

हाँ, हाँ सारी दुनिया रोती है, स्वयं का थोड़ा भी कुछ मरता है तो तुरन्त रोना

आता है। आत्मा को कौन रोता है? जिसे आत्मा की खबर है उसे न तकलीफ है न रोना।

रोग से पीड़ित धन्या मृत्यु में भी स्वस्थ व शांत थी। वह स्वयं दूसरों को हिम्मत बंधाती और कहती आप धैर्य और साहस रखिये ; मुझे पहले से काफी अच्छा लग रहा है। नाहक चिंता क्यों करते हैं। भगवान् अरिहंत को याद करो, नवकार महामंत्र का स्मरण करो, धर्म के प्रताप से सदा शुभ और आनन्द मंगल होता है।

स्वयं धन्या के पिता वर्द्धमान सेठ एवं माता धनवती इन बातों को यादकर आँखे भर लेते और कहते कि हमारी बेटी तो देवी थी किन्तु हमें भी ठगकर चली गई। सच है कि अच्छे लोग जल्दी ही चल देते हैं। यों ये प्रौढ़ दम्पती भी सप्ताहों तक बेटी की याद में बिलखते रहे किंतु आखिर गुरुओं की वाणी कि "कोई आता ही जाने के लिये है। मेले लगते ही बिछड़ने के लिए हैं।" किसी का जाना क्या है?

वह तो हमें आगाह करता है कि जब उठती जवानी उड़ गई तो हम कहाँ तक बच सकते हैं? किन्तु इस संसार की सबसे बड़ी धोखेबाजी यही है कि यहाँ मनुष्य अपनी मौत के बिना सारी बातों को बड़ी गहराई से सोचता है और धोखा खा जाता है इत्यादि "समाज में सब शांत हुए किन्तु धनपाल के हाल में कोई फर्क नहीं आया, बिना बहन के घर सुना पड़ गया था।"

कितने व्यक्ति ऐसे है जिनके एक के होने से ही घर भरा लगता हैं, घर में बीसों व्यक्ति हों और वह एक न हो तो जैसे कोई नहीं है। धन्या के बिना घर शून्य हो गया था। उसकी याद में धनपाल घुटा जा रहा था। उसके माता-पिता एवं पत्नी धनश्री ने उसे खूब समझाया कि जहाँ अपना कोई उपाय नहीं वहाँ कहाँ तक यह सब उचित है? धनपाल का शोक तो कम नहीं हुआ किन्तु उसका स्वास्थ्य भी ढीला पड़ गया। माता-पिता को और चिंता हुई।

वर्द्धमान सेठ ने धनपाल के मित्र धर्मपाल को बुलाकर कहा कि तुम्हारे मित्र के दुःख का कोई उपाय करो, तुम्हारी बात मानेगा। तुम उसके मित्र ही नहीं कल्याण मित्र भी हो।

धर्मपाल ने भी धनपाल को कहा भाई! तुम स्वयं समझदार और विवेकी हो, जो चीज बड़ी से बड़ी कीमत पर या अति कठोर मेहनत से भी नहीं मिल सकती उसके लिए शोक बेकार है। एक तो बहन खोई अब अपना स्वास्थ्य खोओ, और धर्म भी चूको। पता है न, शोक करने से जीव अशाता वेदनीय कर्म का बंध करता है?

धनपाल ने कहा, बन्धु! मैं खूब जानता हूँ पर धन्या को भुला नहीं पा रहा हूँ। और देख भय्या, खाने पीने और खेलने की उम्र में कितनी शांत, गंभीर और प्रौढ़ थी? सरल और समझदार थी? सबसे साथ उसका व्यवहार कितना नम्र व स्नेहल था? कितना संतोष! कैसा विनय! जैसी कथनी वैसी करनी। न छल न प्रपंच, न निंदा न अनादर, न किसी के लिए कभी ओछे शब्द का प्रयोग और धर्म की निष्ठा व श्रद्धा तो कितनी? पर्वतिथि के पूर्व दिन कितनी प्रीति भक्ति से उत्तर पारणा करवाती और पौषध के उपकरण तैयार करके रखती। अरे धन्या..... क्या तू सचमुच चली गई? ओ मेरी बहना..... और वह फिर रो उठा।

तत्वज्ञ और धर्मनिष्ठ धनपाल कि यह स्थिति जान धर्मपाल ने सोचा इसे गहरा सदमा लगा है। इसे लेकर फिर कहीं तीर्थयात्रा को जाना पड़ेगा, यही मात्र इलाज दिखता है।

जब जब इन मित्रों को अवकाश मिलता ये मित्र गिरनार शत्रुंजय आदि तीर्थयात्रा को निकल जाते। जितना समय रहता उतना फासला तय करते। यात्रा से चित्त की स्थिरता-मन का संयम, उदात्त प्रेरणा के साथ तप-जप-व्रत का लाभ मिलता है एवं चिंता व्यग्रता या बोझ उतर जाते हैं। ज्ञानी गुरुओं का समागम, तत्त्व दृष्टि और अनुपम उत्तम संयोग मिलते हैं।

धर्मपाल ने श्री गिरनार महातीर्थ की यात्रा का कार्यक्रम बनाया। परमात्मा श्री नेमिनाथ के बाद भी उनकी महान् चेतना के दर्शन वहां आज भी किये जा सकते है। राग रूपी भयंकर विषधर के विष उतारने के लिए श्री नेमिनाथ भगवान् के दर्शन विषापहारी मणी जैसे हैं। काम गजेन्द्र को फाड़ने

में केसरीसिंह जैसे बालब्रह्मचारी-राजूल परिहारी भगवान नेमिकुमार के दर्शनमात्र से सभी ताप-संताप उपशांत हो जाते हैं। सभी तैयारी कर धनपाल को लेकर धर्मपाल श्री गिरनार महातीर्थ की यात्रा को चल दिया। समय पर दोनों यात्रा कर वापल लौट आये। प्रसन्न और प्रफुल्ल। सबने देखा कि धनपाल का शोक दूर हो गया है। स्वास्थ्य भी अच्छा है और मन भी प्रसन्न है। सभी को संतोष हुआ। किन्तु उसकी पत्नी धनश्री को आश्चर्य भी हुआ।

एकान्त मिलते ही धनश्री ने उससे पूछा आर्य! सच ही यात्रा से लौटने के बाद आप काफी बदल गये हैं। तीर्थों के प्रभाव तो प्रकट ही दिखते हैं। देखिये ना, मुख पर तृप्ति के तेज और संतोष तो साफ दिखाई देते हैं किन्तु कोई महान चीज की प्राप्ति का आनन्द भी झलक रहा है। वैसे भी आप कई बार शत्रुंजय-गिरनार की यात्रा कर चुके हैं, फिर भी आपको गिरनार आदि की इतनी उत्कण्ठा क्यों रहती है कि जब मौका मिला तैयार? जब धर्मी भय्या कहे चलो यात्रा, तो चलो, काम कितने हों-जिम्मेदारियाँ कितनी हों। एक ही तीर्थ में बार बार आपकी बढ़ती हुई उमंग मुझे विस्मित और हर्षित करती है।

धनपाल बोला प्रिये! धर्मी भय्या का तो बड़ा उपकार है, वह है भी धर्म को पालने वाला धर्मपाल-सच्चा और पक्का, और गिरनार की तो महिमा ही अपार है। मैं तो जब दर्शनों को जाता हूँ मुझे तो नवीनता ही दिखती है। वहाँ का वायु-मंडल भी पवित्र एवं प्रेरक है - प्रकृति जैसे हँसती हुई स्वागत को खड़ी है - प्रकृति ने खुले हाथों वहाँ सौन्दर्य बिखेर रखा है।

वहाँ विद्या लब्धि एवं ज्ञान के भंडार और कृपा के निधान जैसे महामुनिराज का भी समागम होता है जो जीवन का महत्त्वपूर्ण रूपांतरण करता है। उनके दर्शन मात्र से अपूर्व शांति प्राप्त होती है। उनका आत्महितकर उपदेश अद्‌भुत प्रभाव पैदा करता है-जिससे विवेकी जीव आत्माभिमुख बनकर अपने हित के बारे में सोचने को विवश होता है।

और परमात्मा! आहा!! उनका तो दर्शन ही सब पाप संताप का नाश करता है। कोई पा ले दर्शन! दर्शन करने वाला चाहिए, जो बड़ी मुश्किल

से कोई कभी पहुँचता है वहाँ। हजारों वर्षों के बाद भी वहाँ का प्रभाव वैसा ही जिन्दा और परमपावन है।

क्या आज भी वहाँ पौराणिक बातों के आसार मिल सकते हैं? ये चीजें जो सुनने में बड़ा अचरज पैदा करती है वे वहाँ आज भी दिखाई देती हैं?

जरूर, क्यों नहीं ? बल्कि जो हम सुनते हैं उससे कई गुना ज्यादा अनुभव होता है, क्योंकि इतनी अनुभूति को कहने, सुनने या सही ढंग से समझाने का मनुष्य के पास कोई उपाय नहीं है - वह तो स्वयं के अनुभव का विषय है।

वह पर्वत भी अत्यंत सुन्दर, महान उत्तुंग और हराभरा है, नहीं?

हाँ, प्रिये! उस सुभग नगाधिराज की क्या बात करूं? उसकी शोभा तो देखते ही बनती है। नीलगगन तक पहुँचे हुए गिरिशिखर परमात्मा श्री नेमिनाथ भगवान की महान आत्मसाधना की सिद्धि के साक्षी की तरह अड़िग खड़े हैं। जिस पवित्र स्थान में प्रभु अरिष्टनेमि केवलज्ञान पाए, जहाँ महान और प्रथंम समवसरण हुआ और जहाँ प्रभु समस्त दुःखों का नाश कर मुक्ति सिधाये वह आज भी उतना ही सौभागी है- वह सहत्राम्रवन जहां पहुंचने पर पशु पक्षी भी आनंदित हो कुजन-गुंजन करते है, नाच उठते हैं, वह उपवन भी कितना प्रभावशाली और मनोमुग्धकारी है!

धन्य हैं प्रभुजी और उनका धाम। आप जैसे पुण्यात्मा भी धन्य हैं, जो यात्रा कर जीवन को सफल करते ही हैं- न मालूम कितने ही जीव आप और आपकी यात्रा से प्रेरणा पाते होंगे ? मैंने सुना है कि वहां दुर्गम स्थानों में कितने ही मुनि भगवंत आत्मसाधना में महिनों तक लीन हो जाते हैं, वे इतने महान होते हैं कि उनकी स्तुति-भक्ति देवता भी करते हैं। और प्रभु जी की पूजा करने कभी स्वयं इन्द्र-इन्द्राणी देव-देवियाँ आदि आते हैं और भाव विभोर हो नाचते भी हैं। क्या यह सच है?

हाँ यह जो तुम कह रही हो, सामान्य बात है। अति विशालकाय उस पर्वत पर बियाबान घनघोर जंगल है। अनेक गहरी गंभीर गुफाए हैं। अनेक किस्म के पशु हैं देखते ही मन खुश हो जाय ऐसे सुन्दर पक्षी हैं। देवतागण, किन्नर-

किन्नरी अप्सरावृन्द वहां आते हैं और प्रभुजी की पूजा - आंगी रचा गुण गा नृत्य कर धन्य बन जाते हैं। वहां सघन बनराजी में, वृक्ष के झुरमुट - समूहों में, गिरिकन्दराओं में विचरते देवता को अचानक ही सिंह की तरह निर्भय, पर्वत की तरह निष्कंप और निजानंद में साधना-ध्यान मग्न श्रमणश्रेष्ठ दिख जाते हैं तो देखते ही रह जाते हैं। आमोद-प्रमोद के लिए टहलते देव-देवियां ऐसे महान साधकों को, उनकी धीरता निर्भरता, संयमशीलता को देख अपने खेल-तमाशे, भोग-लालसा भी भूल जाते हैं। अपनी निर्बलता का अनुभव करते वे इन महान गुरुओं की स्तुति में लीन हो भक्ति से भर जाते हैं - और ऐसे उर्मिल हो उठते हैं कि कभी कभी झूमझूम कर नाचने और कर्णप्रिय भक्तिगीत गाने लगते हैं।

तब तो मुझे भी यात्रा करनी है। बहुत कुछ सुना है, अब तो भगवान अरिष्टनेमि एवं ऐसे महान गुरुओं के दर्शन कर आत्मा को धर्मचेतना से भावित करना हैं। फिर वह गिरनार और वहां का अपार्थिव वातावरण....

हां, हां, मखमल जैसी हरी वनश्री, जैसे कोई हरीभरी ओढ़नी ओढे बैठी नवोढा दुल्हन और उससे मिलने को आतुर झूमते बादल ये बदलियां कभी तो जल भर अभिषेक कर जाती हैं, चम्पक आदि वृक्ष पौधे, संगीत के जादू फैलाते हैं, हवाएं खेलती हैं और शाखाएं नाच उठती हैं उनके साथ। ज्यादा क्या कहूँ? वहां पहुँचते ही रोग-शोक चिंताएं मिट जाती हैं - किसी अशुभ का तो वहां जैसे संचार ही नहीं है। वहां जाने के बाद वापस लौटने को जी ही नहीं चाहता।

वाह, आप कितने पुण्यावान हैं? आपने कितनी ही बार ये यात्रायें कर लीं। हमारे भी अंतराय शीघ्र हटेंगे। मैं भी आश्चर्यमय गिरिराज के मुकुटमणि समान भगवान नेमिनाथ के दर्शन पाउंगी और धन्य बन जाउंगी। देवता प्रभु को पूजते हों और गुरुओं के गुण गाते हों, नाचते हों और झूमते हों यह कितनी अद्‌भुत बात है। क्या यह और ऐसी कई आश्चर्य की बातें सुनी जाती हैं, यह सब सच होगी? हां, हां, सच ही होंगी। कैसा आश्चर्य.....!!!

अरे, भोली! तू सुनकर पगली हुई जा रही है, हम तो ऐसी घटना देखकर सुनकर आये हैं कि किसी तरह भूल नहीं सकते। तू तो देखेगी तब देखेगी। हम जो देखकर आये, अजीब, अद्‌भुत, अति अद्‌भुत।

अच्छा! ऐसी क्या बात है आश्चर्य की? क्या देखा आपने ? कहिये ना। ऐसा आपने क्या देखा कि बोलते गहरे सोच में उतर गये?

कहुं; सावधान हो जा। तू भी आश्चर्य आनन्द के महासागर में तैरेगी।

ऐसी बात है क्या? तब तो कहिए मैं अवश्य सुनूंगी - चाहे रात बीत जाय, भोर हो जाय।

और अपनी पत्नी को धनपाल स्वयं के अनुभव की अपूर्व आश्चर्यमय घटना - जो गिरनार पर घटी थी रात के सन्नाटे में सुनाने को तैयार हुआ, बोला —

धनश्री! तुझे पता ही है कि बहन धन्या के अकाल अवसान से अति पीड़ित मैं उस आघात को सहन नहीं कर सका और दिन प्रतिदिन मानसिक अस्वस्थता बढ़ने लगी। जब कोई उपाय कारगत नहीं हुआ तब भय्या धर्मपाल ने गिरनारजी यात्रा का कार्यक्रम बनाया, और मुझे जाना ही पड़ा। क्योंकि देव, गुरु और धर्म संबंधी कार्यक्रम कोई भी समझदार कैसे ठुकरा सकता है? सही तो यह है कि कोई अच्छा कार्य पुण्याई से सामने आता है, और बहुत कुछ संभावना है कि आये अवसर को हम टाल देंगे - एक बार जो हमने अच्छे कार्य को टाला तो हम टालते चले जाएंगे। तो नतीजा यह आयेगा कि हम हर अच्छाई से टल जायेंगे। सारी दुनिया वीरान होकर भी फिर बस जायगी और मुस्करा कर खिल उठेगी किन्तु जिसने मुश्किल से मिले धर्मसंयोग के अमृतकुंभ को ठुकरा दिया उसे वह मौका दुबारा मिलेगा की नहीं और कभी कोई मौका मिला भी तो उसे ठुकराने में उसे कोई सोचना विचारना नहीं पड़ेगा।

धर्मपाल ने यात्रा का आमंत्रण दिया। भला, यात्रा की ना कैसे कही जाय? फिर यह तो गौरवमय गिरनार भवसमुद्र में तैरता महान जहाज। और हम चल दिये।

यात्रा के लिए निकलते ही सारी दुविधा-चिंता वे दुखदायी यादें सब कुछ दिमाग में से जैसे चली गई और जहाँ जाना था वहीं के बारे में भावनाएं-विचारणाएं बनती चली गयी। नतीजा यह निकला कि गिरनार पहुँचते पहुँचते मन निर्मल, बुद्धि स्वच्छ और काया तंदुरस्त हो गई।

कुछ ही दिनों में हम गिरनार की तलहटी में आ गये और दूसरे दिन अष्ट प्रकारी पूजा आदि के उपकरण ले हम दोनों ऊँचे पर्वत पर यदुकुल भूषण परम योगीश्वर शिरोमणी बाल-ब्रह्मचारी परमात्मा श्री नेमिनाथ स्वामी के अति भव्य मंदिर में उत्कंठा पूर्वक पहुँचे। गद्‌गद् कंठ से स्तुति की। भगवान की करुणा में सराबोर हो समता का व वीतरागता का आनन्द पाया। प्रभुजी की पूजा आंगी स्तवन आदि में ऐसी अपूर्व भाव लीनता आई कि बीतते समय का भी पता नहीं चला। शाम हो गई।

हम दोनों तैयार हो पुनः दर्शन कर जल्दी से बाहर जाने लगे ही थे कि एक अति सुन्दर एवं अति दैदिप्यमान नारी ने श्री जिनमंदिर में प्रवेश किया। उसके शरीर की कांति से सारा मंदिर आलोकित हो उठा। अत्यंत भाव भक्ति से अवनत हो वह श्री नेमिनाथ भगवान् के अलौकिक गुण गाने लगी। पीछे खड़े हम दोनों को अत्यंत कौतुक एवं विस्मय हुआ। हम खंभे के पीछे छुपकर उसकी भाव भक्ति अर्चना देखकर मुग्ध हो गये। उसने अति उत्तम द्रव्य से प्रभु की पूजा की, स्तुति की, चैत्य वंदना की और वीणा को लेकर रंग मंडप में आ बैठी।

क्रमशः

वैर का विपाक

ग्रीष्म में जब असह्य धूप पड़ती है, गरम-गरम लू चलती है तब देह के अंदर से प्रस्वेद की धाराएं फूटती-निकलती रहती हैं। इससे शरीर ठंडा हो जाता है। प्रकृति इस प्रकार देह की गर्मी से रक्षा करती है।

परन्तु घोर उपसर्गों के सामने घोर तपस्वी-ध्यानस्थ मुनिवर जो प्रशम की धाराएं बहाते हैं वे तो समरादित्य जैसे मुनिपंगवों को धधकती आग में भी, अकंप और अडोल खड़े देखे वही कुछ समझ सकता है। आग से रक्षण हो तो पानी जैसा अन्य प्रतिकार ही नहीं है। परन्तु उग्र वैर-ईर्ष्या-वैर की गाँठ बाँध रखने वाले से बचाव करना हो और उसको एवं अपने को प्रत्याघातों से बचा लेना हो, शेष विश्व में मैंत्री और आत्मीयता की प्रतिष्ठा करानी हो तो, प्रराम अथवा उपशम के सिवा दूसरा कोई उपाय ही नहीं है। समर्थ मुनियों का ऐसा उपशम सहज होता है।

समरादित्य के अंग-प्रत्यंग को आग की शिखाएं चूम रही थीं। फिर भी उनके अंतर में से बहती उपशम की धाराओं के पास ये शिखाएं कंगाल और ग्लान ही दीखती थीं। ताप जैसे उग्र बनता जाता है वैसे ही उपशम की धाराएं अधिकाधिक वेगवान होती जाती हैं। मुनि के मुख पर लहराती आत्मनिष्ठा यदि कोई ऐसे समय निश्चय रूप में देखे तो समरादित्य उपशमरस के महासागर में में गोते लगा-लगाकर अवगाहन कर रहे थे ऐसा लगेगा। उपशम की धारा को बहने का बड़ी कठिनाई से ही यह अवसर मिल गया था। इतने ही में क्या देखते हैं कि उज्जयिनी में आकाश में मध्यरात्रि में भी मानों हजारों सूर्य एक साथ प्रगट हो गए हो ऐसा उद्योत दमक उठा और दूर ही दूर दिगन्त में देवदुंदुभी गाज उठी। उज्जयिनी की निद्रा मानो किसी जादूगर के फूंक से क्षणमात्र में ही भाग गई। लोगों के समूह के समूह उस उद्यान की ओर चल पड़े। मुनिचंद्र महाराज के साथ उनके सामंत, अमात्य और सरदार भी आ

पहुँचे। उज्जयिनी के धनपति और व्यापारी शिल्पी और श्रमजीवी, स्त्री, वृद्ध, युवक और बालक भी पहुँच गए। उद्यान में निर्भय घूमते पशु भी अपना मित्र और शत्रु भूल वहाँ समरादित्यमुनि के समीप आकर बैठ गए।

मुनि समरादित्य को उनकी उग्र तपश्चर्या और अनिर्वचनीय प्रशमरस के प्रताप से केवलज्ञान प्राप्त हो गया। आकाश को रोशन कर देनेवाली यह झलझलाहट केवलज्ञान की ही थी। देव दासियों के समूह यह उत्सव मनाने को उज्जयिनी की ओर उड़ते आ रहे थे।

मुनि समरादित्य के अंग को आलिंगित करती ऊपर की अग्नि दूर हो गई। इंद्र ने समरादित्य केवली को वंदन कर कहना शुरू किया। भगवन्! आप धन्य हैं, आपका मोह सर्वथा नाश हो गया है, सर्व क्लेश सदा के लिए दूर हो गए हैं, कर्म रूपी शत्रुओं पर आपने विजय प्राप्त कर लिया है।

इस प्रकार इंर से लेकर सामान्य श्रद्धालु नर-नारियां जब समरादित्य केवली को वंदन कर रहे थे तब वह गिरिसेन कहाँ था?

एक कोने में जहाँ किसी को वह दिखलाई नहीं पड़े, इस प्रकार समूह के बीच में वह खड़ा था। आज तो उसको भी हुआ कि ऐसे विश्वबन्द मुनि को दुःख देकर उसने बहुत ही बड़ा पाप किया था। उसका अंतर अकुला रहा था। मात्र प्रगट रूप से क्षमा माँगने को केवली के पैरों में गिरकर अंतर की ईर्ष्या-वैर को धो डालने का उसमें साहस नहीं था।

केवली भगवान समरादित्य ने परिषद को सम्बोधन करते हुए धर्ममार्ग का उपदेश दिया। देशना पूरी होने पर मुनिचन्द्र महाराजा नें स्वयं ही पूछाः

भगवन्! अकस्मात् यह उपसर्ग आप पर कैसे हुआ?

राजन्! यह अकस्मात् ही नहीं हुआ है। जिसने यह उपसर्ग किया था वह तो नौ-नौ भव से मेरी कसौटी करता आ रहा है। यह अन्तिम कसौटी थी। कोई भी उगाया हुआ बीज निर्थरक नहीं जाता है। वैर का सूक्ष्मतम बीज भी इसी प्रकार उग जाता है।

नौ-नौ भव से वैर रखनेवाले इस मनुष्य की दुर्दशा का कब अन्त आएगा? मुनिचंद्र ने विशेष जानने की इच्छा प्रगट की।

चाहे जो हो, परन्तु यह गिरिसेन जिसने कि यह उपद्रव किया है, भव्यात्मा है। नारकीय यंत्रणाओं में से निकल जाने के पश्चात् वह अपना उद्धार कर सकेगा। अभी भी इसको ऐसा तो लग रहा है कि इस मुनि को सताने में मैंने पाप किया है। यही पश्चात्ताप का सूक्ष्म तिनका एक दिन उसके पापपुंज को भस्मीभूत कर देगा। भगवान् समरादित्य के मुख से पापी के उद्धार की बात सुनकर सब श्रोता का गिरिसेन के प्रति धिक्कार अनुकंपा में बदल गया।

केवली भगवान के विश्व पर किए उपकारों का वर्णन करते हुए वाग्देवी भी थक जाए। आत्मा की अनंत शक्ति और करुणा के इस मूर्त स्वरूप का, और तीनों काल एवं तीनों लोक का प्रतिबिंब जिसके अंतर में पड़े ऐसे केवलज्ञानमज्ञता का पूरा-पूरा वर्णन कोई भी नहीं कर सकता है। बुद्धि और कल्पना भी केवलानंद-केवलज्ञान के समीप पहुंचने में हार जाती है।

समरादित्य केवली की यह जीवन कथा पिछले एक हजार वर्ष से भी अधिक वर्षों से जैन समाज में खूब प्रचलित और परिचित है। आचार्य हरिभद्रसूरि ने इस कथा को अपनी काव्यमय वाणी में कहकर अमर और मनोहर बनाया है। इन सूरिजी का समय वि. सं. ७५७ से ८२७ तक का माना जाता है। परन्तु यह कथा उनके पूर्व भी साधुसमुदाय में और शास्त्राभ्यासियों में सुख्यात थी।

एक प्रमाण ऐसा भी मिलता है कि श्री हरिभद्रसूरि जैसे शांत-नम्र-क्षमाशील पुरुष भी एकबार क्रोध से भभक उठे थे। यह उनका क्रोध निष्कारण नहीं था। उनके दो प्रिय शिष्यों को बौद्ध-साधुओं ने मार दिया था। उनके नाम हंस और परम हंस था। दोनों सगे भाई होते थे और श्री हरिभद्र सूरि के भी संसारी संबंध से भानजे थे। अभ्यास और विनय से इन दोनों भाइयों ने हरिभद्रसूरि के दिल में बहुत ऊंचा स्थान पा लिया था। बौद्धों ने उन्हें सताया यह बात जान लेने पर उन्होंने उनसे वैर लेने का निश्चय किया। ऐसा कहा जाता है कि पांच-छह बौद्ध भिक्षुओं को वे राजसभा में पराजित कर

उकलते तेल की कढ़ाई में होम भी चुके थे। फिर भी उनका वैर शांत नहीं हुआ था। अधिक वैर लेने की गुरुदेव तैयारी करते थे।

इतने ही में उन्हें अपने गुरुदेव का संदेशा प्राप्त हुआ। गुरु श्रीजिनभद्रजी भी हरिभद्रसूरि के इस वैर के बदले की बात सुनकर कांप गए थे। संदेश में उन्होंने और कुछ भी नहीं कहलाया मात्र इतना ही कि गुणसेन और अग्निशर्मा की बात तो तुम्हें स्मरण है ना? नौ-नौ भव तक उस वैर के विपाक भुगतनेवाले की बात किंचित विचार लेना। वैर का मारा एक जन संसार में बुरी तरह से भटकता है और दूसरा क्षमा-उपशम के प्रताप से संसार तैर जाता है।

हरिभद्रसूरि की वैर की अग्नि गुरु द्वारा भेजी हुई तीन गाथाओं को पढ़कर ही शांत हो गई। वैर का उन्होंने प्रायश्चित लिया और उसी प्रायश्चित के एक अंग रूप उन्होंने यह समरादित्य कथा लिखी। पंडित प्रवर पद्मविजयजी महाराज, जिन्होंने इसी विषय पर रागरागिणीवाला रास रचा है, कहते हैं कि

श्री हरिभद्रसूरिश्धरे
चौदर्शे चयच्चालीश (१४४४)
ग्रंथ आलोयशमा ग्रह्या
जगमो बहोत जगीश
प्रथम ग्रंथ प्रारम्भिओ
क्रोध निरासने काम
एह गुरू आम्नाय छे
समता संग सुठाम।

मूल कथावस्तु श्री हरिभद्रसूरिजी से भी बहुत ही प्राचीन होना चाहिये। उस मूल कथा को सूरिजी ने नया ही रूप दिया। पांडित्य कल्पना, रसानुभूति तो सूरिजी को स्वाभाविक थी। समरादित्य कथा में उन्होंने अपना हृदय निचोड़कर ही रख दिया है। उनके युग के और उनके परवर्ती संस्कृत विद्वानों ने इस समरादित्य कथा की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO
MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

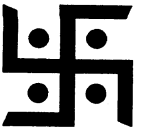

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 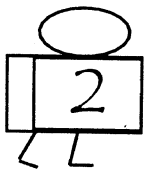 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

All Prices BELOW M.R.P.

FREE HOME DELIVERY

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering. Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 11 TITTHAYARA Fabruary 2006
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225